मोरंगे

जनवरी – फरवरी 2024

केशव गुर्जर, कक्षा 4, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : खुशी
आवरण फोटो – शिवकुमार गाँधी
वितरण : लोकेश राठौर
वर्ष 15 अंक 163–164

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विष्णु गोपाल,
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1ए, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर,
मानटाउन, सवाईमाधोपुर
राजस्थान
322001

अरविन्द गुर्जर, कक्षा 7, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

खिड़की
दो कविताएँ– राजेश जोशी

गीत-कविताएँ
बस का सफर
चिड़िया माँ
पति–पत्नी
छुट्टी का दिन
मीठी है ये मिठाई
खीर, पहलवान

कहानियाँ
पानी की ट्रेन
छोटे मोटे जादूगर

याद की धूप-छाँव में
जब मैं छोटी थी, एक बार की बात
डर
डांस

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर
जिसे अखबारों और टीवी में ही देखा सुना था
जंगल के गाँव की याद

बात लै चीत लै
देखा जाएगा

बतरस
बिल्ली से बातचीत
रिमोट से बातचीत

गतिविधि, पहेलियाँ और हीहीठीठी

इस बार

रोहित महावर, फेलो, अल्लापुर

खिड़की

सुनो भाई गप्प
सुनो भाई शप्प
नाव में नदिया डूबी जाए !

चींटी चढ़ी पहाड़ पे
लेकर नौ मन तेल
हाथ से बाँधे हाथी घोड़े
दुम से बाँधी रेल !

सुनो भाई .....

प्रस्तुति : राजेश जोशी

पेड़ क्या करता है?

माँ कहती है
पेड़ रात में सोते हैं

तो पेड़
क्या करता है दिन भर?

हम्माल
हम्माली करता है
मजूर
मजूरी
अफसर
अफसरी करता है
बाबू बाबूगिरी

और
रात को थक कर सोता है
और पेड़?

पेड़ क्या करता है दिन-भर?

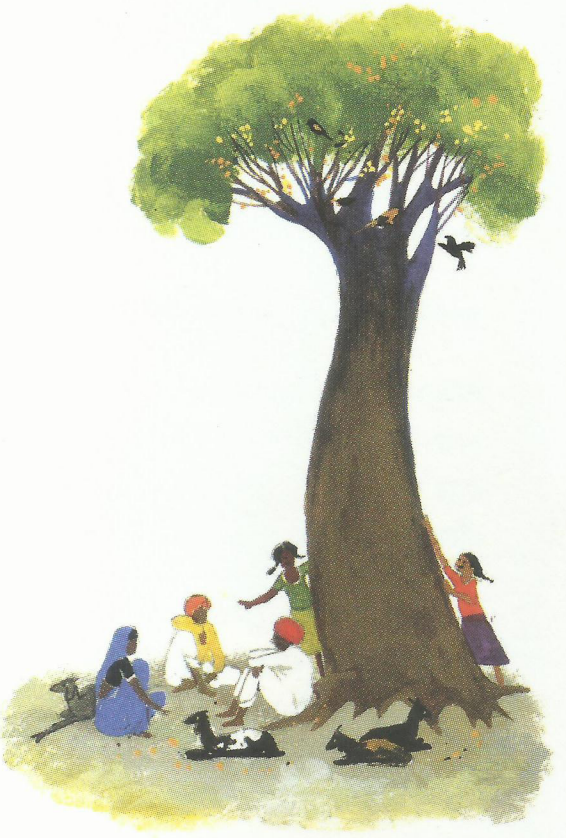

गीत कविताएँ

चाँद नायक, कक्षा–5,
उदय सामुदायिक
पाठशाला, कटार।

चिड़िया माँ

चिड़िया माँ ने फोन उठाया
झट बच्चों को फोन मिलाया
अन्न का दाना मिला नहीं
दूर बहुत मैं निकल गई
इधर हुई बरसात बड़ी
मैं घर भूल गई छतरी
लेकिन तुम घबराओ नहीं
मैं बस से आ जाऊँगी

भारती माली, कक्षा 6 हरियाली समूह, फरिया।

दीपक कुमार सैनी, फेलो, उदय किरण।

मीठी है ये मिठाई

एक था हलवाई
बना रहा था मिठाई
देख मिठाई
खाने की आई
पूछा तो तीन सौ की किलो बताई
मैंने कहा – चखाओ भाई
उसने कहा – ये लो भाई
पैसे तो थे ही नहीं
मैंने कहा –पसंद नहीं आई
उसने कहा– क्या कमी पाई
मैंने कहा–मीठी ज्यादा है ये मिठाई
हलवाई ने मेरी खबर ली ही होती भाई
पर मैंने भी क्या दौड़ लगाई
तुम समझ ही सकते हो भाई

लोकेश जाँगिड़, शिक्षक– गिर्राजपुरा।

छुट्टी का दिन

छुट्टी का दिन आया है
सबके मन को भाया है
आज न पढ़ने जाएँगे
दिन भर शोर मचाएँगे

प्रियंका गुर्जर, कक्षा– 7, समूह–लोटस,
उदय सामुदायिक पाठशाला,
गिर्राजपुरा।

शीतल बैरवा, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया।

खीर

मोकू पतो कोन छो भाई
मूं सोर्‌यो छो ओढ रजाई
माई नं ताजा रांधी खीर
बोली–उठ जा म्हारा बीर

उठ–उठ रे म्हारा लाल
नींद कयां आ री रे
थारी थाळी मं या खीर
पड़ी दुख पा री रे

अब तू जग्या रजाई चीर
खैंण या म्हारी रे
सो जाज्यो गटागट पीर
खीर गुणकारी रे

प्रेमचंद, शिक्षक, उमंग, श्यामपुरा।

आशा यादव, शिक्षिका, उमंग, जगनपुरा।

पहलवान

साग चने का खाऊँगा
पहलवान बन जाऊँगा
कुश्ती लड़ने जाऊँगा
धूल में सन जाऊँगा
मम्मी मुझको डाँटेगी
बोरी में घुस जाऊँगा

प्रेमचंद, शिक्षक, उमंग, श्यामपुरा।

चन्द्रप्रकाश नाम, शिक्षक, उमंग,श्यामपुरा।

मान सिंह मीना, समन्वयक, उदय किरण।

पति -पत्नी

झगड़ा बहुत होता था उन दोनों में
एक दिन झगड़ा सुलझाने
गए एक होटल में
थोड़ा खाएँगे थोड़ा मुस्कराएँगे
खुशी खुशी घर आ जाएँगे
दिल हो जाएगा हल्का
लेकिन किसी बात पर
दोनों का मिजाज पलटा
एक दूसरे पर प्लेटें फेंकने लगे
लोग उठ उठ कर भागने लगे
महल जैसा होटल
कचरे के डिब्बे जैसा हो गया
बर्बादी का खर्च चुकाना पड़ा
घर से पैसा लाना पड़ा

सपना सैन, 13 वर्ष, उमंग, केन्द्र-कुण्डेरा।

बस का सफर

मेरी बस जब गई सिरोही
उसमें बैठे पर्वतारोही
रस्ते में जब बस डाटी
खायी दाल और बाटी
कुत्ते वहाँ कई थे खाँटी
उनने सारी पत्तल चाटी
वो भी बस में हुए सवार
चलो देखने कुतुबमिनार

फतेह सिंह गुर्जर, कक्षा - 7, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

कहानियाँ

पानी की ट्रेन

एक नदी में एक कछुआ और कछवी रहते थे। वहीं अपना जीवन बिता रहे थे।

एक दिन कछुअे ने कहा–'हम दोनों कई महीनों से पानी में ही रहते हैं। पानी के बाहर कहीं चलते हैं।'

कछवी ने कहा–'बाहर क्या करेंगे?'

कछुअे के कहने पर दोनों किनारे की तरफ आ गए।

किनारे पर मछुआरा मछली पकड़ रहा था। कछुआ और कछवी मछुआरे के जाल में फँस गए। मछुआरा दोनों को अपने घर ले गया। उसने चूल्हा जलाया। कछुआ–कछुवी दोनों को भगोने में चढ़ा दिया। और किसी काम से बाहर चला गया।

तभी जोरदार बारिश होने लगी। मछुआरे की झोंपड़ी में से पानी सीधा भगोने में गिरने लगा। चूल्हा बुझ गया। भगोना पानी से भर गया। कछुआ कछुवी कूदकर बाहर आ गए।

बाहर आकर देखा तो रास्ते में तेज पानी बह रहा था। वे उस पानी में तैर गए। ऐसा लग रहा था जैसे धकल–धकल बहते पानी की ट्रेन में बैठ गए हों। कुछ ही देर में पानी की ट्रेन ने उन्हें नदी में पहुँचा दिया।

नदी में उतरने के बाद तो उन्हें मालूम था कि किधर जाना है। वे गहरे पानी में उतरते हुए अपने घर पहुँच गए।

मनीषा बैरवा, 12 वर्ष, हरियाली समूह, फरिया।

छोटे मोटे जादूगर

एक शहर में दो भाई रहते थे। वे दोनों छोटे मोटे जादूगर थे। उस शहर में एक सेठ भी रहता था। वे उस सेठ के यहाँ काम किया करते थे। एक दिन सेठ ने जादूगरों से कहा कि देखो मेरे बेटे की शादी है। तुम दोनों को उस शादी में जादू दिखाना होगा। इसके बदले में तुम्हें दो हजार रुपये मिल जाएँगे।

दोनों जादूगर भाई सेठ के बेटे की शादी में जादू दिखाने गए। उनमें से एक जादू दिखाने लगा। जादूगर ने एक मेंढ़क दिखाया और बोला–'ये आपसे आदमियों की तरह बात करेगा।' जादूगर ने मेंढ़क पर एक कंकड़ फेंका। मेंढ़क टर्र टर्र करने लगा।

एक बाराती ने मेंढ़क से कहा–'नमस्ते! कैसे हो?'

मेंढ़क कुछ भी नहीं बोला। दूसरे बाराती ने पूछा–'टिरड़क बाबू तुम्हारा नाम क्या है?'

मेंढ़क कुछ भी नहीं बोला। तीसरे ने पूछा, चौथे ने पूछा, कई लोगों ने मेंढ़क से बात करने की कोशिश की। लेकिन मेंढ़क कुछ नहीं बोला। लोग शोर मचाने लगे। शादी में आए मेहमानों का शोर सेठ ने सुना।

'नकली जादूगरों को मारो।' ऐसी आवाजें आ रही थी। सेठ ने लोगों से बचाकर जादूगरों को वहाँ से भगा दिया।

दोनों छोटे मोटे जादूगर भाई बेरोजगार हो गए। काम की तलाश में इधर–उधर घूमने लगे। आखिरकार उन्हें एक पकौड़ी के ठेले पर काम मिल गया। वे पकौड़ी बेचकर अपना जीवनयापन करने लगे। और कभी भी जादू दिखाने के बारे में नहीं सोचा।

अभिषेक गुर्जर, कक्षा–7, समूह – लोटस, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

प्रेमचंद कोली, शिक्षक, उमंग,श्यामपुरा।

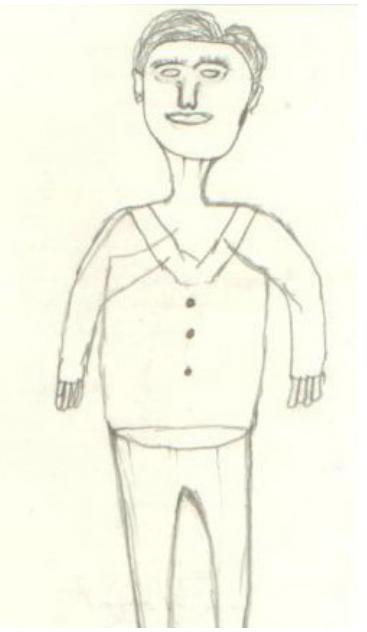

रघुवीर बैरवा, शिक्षक, उमंग,मखौली।

याद की धूप छाँव में

जब मैं छोटी थी

1

जब मैं छोटी थी तो शैतानियों से भरी हुई थी। मेरे खेलने के लिए बहुत सारे खिलौने थे। तब मैं स्कूल नहीं जाती थी। और जाती भी तो घर का कोई न कोई सदस्य मुझे स्कूल छोड़ने जाता था। और मैं उसके साथ ही स्कूल के अंदर जाती थी। और उसके साथ ही स्कूल से वापस घर आती थी।

जब मैं स्कूल जाती तो मेरी मम्मी मुझे नहलाकर, स्कूल की निक्कर बुर्शट पहनाकर, काजल लगाकर, दस रुपये देकर स्कूल भेजती थी। मेरी स्कूल में एक लड़की पढ़ती थी। उसका नाम संजना था और वो एक दिन मुझसे कट्टी हो गई। मैंने उसे मनाने की बहुत कोशिश की कि संजना मान जा। पर वो नहीं मानी। मैं उसे नहीं मना सकी। उसने मेरे गले पर माला की मार दी।

मैं स्कूल में खिचड़ी खाती थी और फूली खाती थी। और घोड़े पर खेलती थी और रोटी सब्जी भी खाती थी।

और एक बार की बात

2

एक बार की बात है हमारे घर में दो चुहिया थी। एक दिन मैं अकेली अपने कमरे में चोटी कर रही थी तो मुझे चूँ–चूँ की आवाज सुनाई दी। मुझे थोड़ा डर लगा। फिर मैं फिर से चोटी करने लगी। तो आवाज और जोर से आने लगी। फिर मैं बाहर चली गई और अपनी मम्मी को यह बात बतायी। फिर हमने उन्हें झाड़ू से बाहर निकालने की सोची। मम्मी ने उन्हें कमरे के बाहर निकाला। मुझे डर लग रहा था, मैं तो पलंग पर बैठ गई। मम्मी ने उन्हें बाहर निकाल दिया। मुझे तो बहुत हँसी आ रही थी।

राधिका महावर, 11 वर्ष, अल्लापुर।

ब्रजेश कुमार बैरवा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया।

मेरे को डांस करना इतना ज्यादा पसंद है कि मतलब हमारे मोहल्ले में जब भी डीजे आता है तो मैं सोचती हूँ, अपने घर में कब शादी फंक्शन होगा कि मैं डांस कर सकूँ।

मैं डांस करती हूँ तो मेरे को महसूस होता है कि कोई मेरे बारे में क्या सोच रहा होगा। अच्छा या बुरा सोच रहे होंगे। मेरे को पहले तो डांस करने में सरम आती है। फिर बाद में नहीं आती।

जब हम सब लड़कियाँ रावल गए तो मैंने वहाँ बहुत डांस किया। वहाँ डांस में इतना मजा आया कि वापस आने का मन ही नहीं किया। वहाँ का माहौल भी ऐसा था कि डांस करने में बिल्कुल सरम नहीं आयी। खूब डांस किया मैंने वहाँ पर। सबने बोला कि अच्छा डांस किया। मेरे घर पर सब बोलते हैं कि ये तो हमारे घर में डांसर है। लेकिन मैं इतना अच्छा भी डांस नहीं करती। मेरे से भी अच्छा डांस मेरी दोस्त करती है। मेरा बहुत बड़ा परिवार है लेकिन उसमें मैं सबसे अच्छा डांस करती हूँ। मेरे को डांस बहुत ही पसंद है।

सानिया मिर्जा, कक्षा 10, उमंग सेन्टर, कुण्डेरा।

शांति गुर्जर, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया।

डर

मैं सवाईमाधोपुर से पाँच बजे वाली ट्रेन में बैठी थी। मैं रेल में से दूसरी तरफ झाँक रही थी। एक व्यक्ति बाहर से खिड़की में झाँककर किसी व्यक्ति को कह रहा था कि तुम मुझे पानी की बोतल दे देना। उस व्यक्ति की नजर मुझ पर पड़ी तो मैं डर गई। मैंने मेरे पिता को कहा कि 'पिताजी वो मुझे देखकर, मुझसे कोई बात कहने लग रहा है।'

तभी ट्रेन चल पड़ी और जयपुर चल पड़ी। ट्रेन में एक ट्रेन वाला सबके टिकिट देख रहा था। यह एक साल पुरानी बात है और मैंने अपनी आँखों से देखा है कि ट्रेन चल रही थी और ट्रेन में दो व्यक्ति दरवाजे पर लटक रहे थे। दोनों की हत्या हो गई थी। वे मर गए थे। ऐसा हुआ ही था कि मुझे सपना दिखा था।

यह लोककथा जयपुर की है जो कि एक पिता और बेटी के ट्रेन से जाने की है।

आकांक्षा सैनी, 12 वर्ष।

गौरव गुर्जर, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

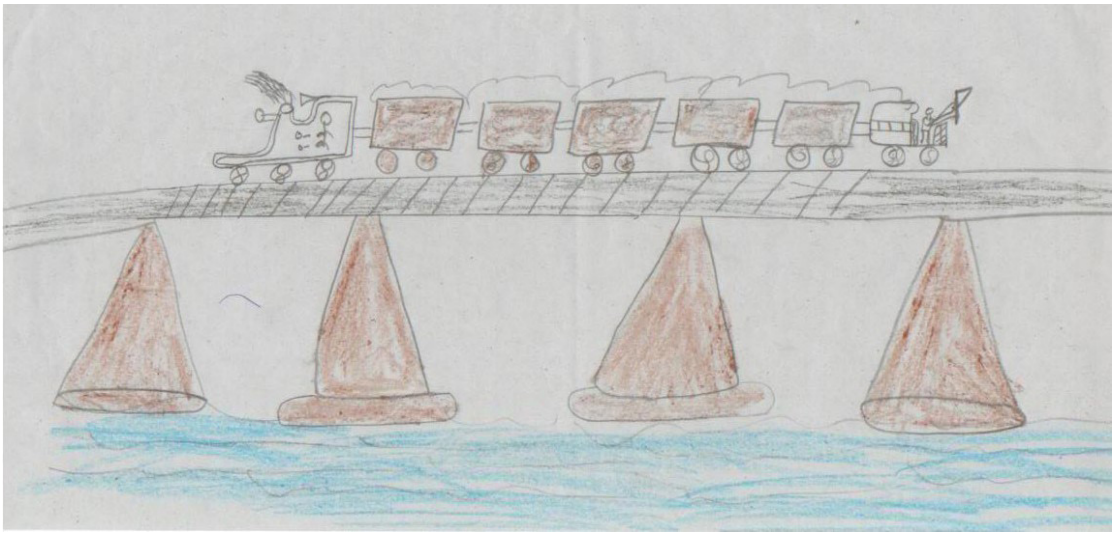

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

वो पल जिसका इंतजार था

एक दिन जगनपुरा स्कूल से हमारे घर आशा मैडम आयी। वे मुझे बहुत दिनों बाद मिली, मिलकर मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने मुझे बताया कि जो लड़कियाँ जगनपुरा स्कूल में पढ़ी हैं, उनकी मीटिंग हुआ करेगी। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। क्योंकि घर पर रह–रहकर परेशान हो गई थी।

एक दिन मैं जगनपुरा स्कूल गई। वहाँ पर बहुत सारी लड़कियाँ थी। सभी से मिलकर बहुत अच्छा लगा। सभी लड़कियों ने साथ मिलकर बहुत सारी गतिविधियाँ की। जैसे कि पद गाए, अपने जीवन के बारे में चर्चा की। फिर हम सभी अपने अपने घर चले गए।

एक दिन फिर आशा मैडम का फोन आया। उन्होंने कहा कि उमंग ग्रुप को कहीं ट्यूर पर ले जाना है तो आप कहाँ जाना चाहते हो? उन्होंने कुछ जगहों के नाम बताए तो मुझे दिल्ली अच्छा लगा। फिर एक दिन स्कूल में मीटिंग हुई जिसमें तय हुआ कि हम दिल्ली जाएँगे। हमने वहाँ जाने के लिए सात सौ रुपये भी भी जमा करवाए। सत्ताइस सितम्बर को दिल्ली जाना तय हुआ।

मैं बहुत खुश थी कि बहुत दिनों के बाद हम दोस्तों के साथ घूमने जा रहे हैं। मैं बाजार भी गई कि यात्रा के लिए अगर कोई जरूरी चीज नहीं है तो ले आती हूँ। सत्ताइस तारीख को सात तीस पर ट्रेन थी तो भारती दीदी ने हमसे कहा कि सभी लड़कियाँ छह बजे रेलवे स्टेशन पर आ जाना। और डायरी साथ में लाना। मुझे जाने की खुशी में रात में नींद भी नहीं आ रही थी, बड़ी मुश्किल से नींद आयी। फिर भी सुबह चार बजे उठकर नहाने चली गई। साढ़े पाँच बजे हम घर से निकल गए। रेलवे स्टेशन पर कुछ लड़कियाँ पहले से ही थी। साढ़े सात बजे ट्रेन आ गई। हम उसमें बैठ गए। और दिल्ली के सपने आँखों में लिए बैठे रहे। आखिर हम एक बजे दिल्ली पहुँच गए।

स्टेशन से हम मेट्रो स्टेशन गए। मेट्रो में बैठने के बाद हम खाना खाने निकल गए। एक गुजराती होटल में हमने खाना खाया। खाना बहुत खराब था। हम राजस्थानी, खाना गुजराती। सभी चीजें मीठी थी। खाना खाकर हम मेट्रो में बैठकर लाल किला देखने निकल गए।

वे पल आ गया जिसका मुझे इंतजार था। लाल किला मेरी आँखों के सामने था। जिसे मैंने आज तक सिर्फ टीवी और किताबों में देखा था। मुझे बहुत अच्छा लगा। लालकिले के बाहर से एक चश्मा लिया। और बैग को एक कमरे के अंदर रखकर लाल किले के अंदर चले गए। लाल किले के अंदर बाजार भी था। वहाँ से मैंने एक टोपी ली। फिर हम और अंदर गए। वहाँ एक इमारत थी। हराभरा मैदान, दीवान–ए–खास और दीवान–ए–आम भी था।

भोला शंकर वर्मा, शिक्षक, उमंग, जगनपुरा।

और भी बहुत कुछ था। लाल किला बाहर से जितना अच्छा था, अंदर से उतना अच्छा नहीं था। वहाँ घूमने के बाद हम इण्डिया गेट के लिए रवाना हुए।

इण्डिया गेट के सामने एक बड़ा सा मैदान था उसमें बैठकर हमने थोड़ा आराम किया। भेलपुरी खायी, आइसक्रीम खायी और घर पर बात की। फिर हम इण्डिया गेट से पास गए। वो उस मैदान से ही दिखाई देता है और ज्यादा दूर नहीं है। हम पैदल ही वहाँ चले गए। इण्डिया गेट बहुत–बहुत ज्यादा बड़ा था। वहाँ फोटो खींची। मजा किया। फोटो भी निकलवायी। फिर हम होटल के लिए रवाना हुए।

होटल को जाकर देखा तो वो हॉस्पिटल की तरह लग रही थी। पर क्या करते, वहाँ रहना पड़ा। वहाँ से अगले दिन हम लोटस टेम्पल देखने गए। जहाँ भी जाते मेट्रो से जाते थे, इसलिए चक्कर आने लगे थे।

हमने लोटस टेम्पल देखा जो कि बहुत बड़ा था। वह कमल की तरह ही दिखाई देता था। और उसमें नौ पंखुड़ियाँ थी। वह अंदर से बिल्कुल शांत था। उसके अंदर आवाज नहीं कर सकते थे। इसलिए फोन को भी साइलेंट कर दिया। वहाँ भी हमने फोटो खींची।

फिर खाना खाने के लिए एक होटल में गए। वहाँ का खाना बहुत अच्छा था। खाना खाकर हम रेलवे स्टेशन के लिए निकल गए। हम थोड़ा लेट हो गए। ट्रेन चलना शुरू हो रही थी। निकलने ही वाली थी। हमें देखकर एक आदमी ने चेन खींच दी। हम ट्रेन में बैठ गए। बैठते ही रेलवे पुलिस आ गई। थोड़ी नोंक–झोंक हुई। पर सब ठीक हो गया। हम साढ़े पाँच बजे सवाई माधोपुर पहुँच गए।

एक लड़की के पापा के पास उनकी खुद की कार है। उसमें बैठकर हम घर आ गए।

यहीं पर हमारा दिल्ली का सफर खत्म नहीं होता। एक दिन फिर से स्कूल बुलाया। चार केक लाए गए। उनको काटा गया। खाया गया। और जो पैसे बचे वे लड़कियों को लौटाए गए।

सविता मीना, पूर्व छात्रा, उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा।

कविता बैरवा, फेलो, उदय किरण, बोदल।

जंगल के गाँव की याद

एक गाँव था
उस गाँव में एक जंगल का रास्ता जाता था
गाँव में कई बार शेर और बारहसिंघे आ जाते थे
एक दिन वन विभाग वाले आए
कहने लगे कि यह गाँव आपको छोड़कर जाना पड़ेगा
गाँव वाले परेशान हो गए कि
हमारे जानवरों को कैसे पालेंगे
हमारे पास खेतों के अलावा कुछ भी नहीं है
लेकिन वन विभाग वालों ने उनको बहुत दूर
खेती की जमीन और लकड़ियाँ दे दी
कुछ दिन बाद गाँव वाले गाँव छोड़कर चले गए
वहाँ बिजली नहीं आती थी
तो गाँव वाले खेत से जल्दी आते
क्योंकि उनको खेत बहुत दूर दिए गए थे
एक दिन एक आदमी खेत से नहीं आया
उसकी पत्नी गाँव वालों से कहने लगी
कि पिंकी के पापा नहीं आए
गाँव वाले उसको ढूँढने गए
वह आदमी मर गया था
वे उसे ला रहे थे, तब
उनको एक बड़ा साँप दिखाई दिया

अर्चना गुर्जर, 13 वर्ष, समूह-लोटस, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

बात लै

देखा जाएगा

किसी गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। उसकी दो बेटियाँ थी। बुढ़िया को बेटियों की कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे पढ़ी लिखी थी। और अब तो कॉलेज में पढ़ रही थी। बेटियों को बुढ़िया की कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि बुढ़िया अभी इतनी मजबूत थी कि अपना और घर का सारा काम खुद ही कर लेती थी। और वह सिलाई का काम भी करती थी।

एक दोपहर बुढ़िया ने बेटियों से पूछा –'तुम्हारा क्या सपना है?'

बेटियाँ कहती है कि 'हमारा तो अब ये सपना है कि हमारी शादी करवा दो।'

बुढ़िया कहती है कि 'मेरे पास अभी तो इतने पैसे नहीं है कि तुम्हारी शादी का खर्च उठा सकूँ।'

बेटियाँ कहती है कि 'हमारी शादी तो करवाओ ही करवाओ।'

बुढ़िया कहती है, 'ठीक है फिर, पहले मैं लड़के देखती हूँ।'

बेटियाँ कहती हैं, 'लड़के तुम क्यों देखोगी? तुम्हें शादी करनी है क्या?'

बुढ़िया कहती है, 'मैं अपने लिए नहीं तुम्हारे लिए लड़के देखने की बात कर रही हूँ।'

बेटियाँ कहती है, 'हमारे लिए लड़के तुम क्यों देखोगी भला?'

बुढ़िया कहती है, 'तो और कौन देखेगा?'

बेटियाँ कहती है, 'हमारे लिए लड़के हम खुद देखेंगी। बल्कि हमने देख रखे हैं। तुम्हें तो बस शादी में शामिल होना है।'

बुढ़िया का चेहरा मुरझा गया। बोली–'वैसे कहाँ करने वाली हो तुम ये शादी?'

बेटियाँ बोली, 'यहीं और कहाँ?'

बुढिया बोली, 'यहाँ तो गाँव वाले तुम्हें अपनी पसंद के लड़कों से शादी नहीं करने देंगे।'

बेटियाँ कहती हैं, 'हम गाँव वालों की शादी थोड़े ही कर रहे हैं। शादी तो हमारी है, हम जिससे चाहे करें।'

बुढ़िया कहती है, 'मुझे लगता नहीं कि ऐसा हो पाएगा।'

बेटियाँ कहती है, 'देखा जाएगा।'

हिमांशु गुर्जर, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।
(कहानी का पुनर्लेखन किया गया है।)

चीत लै

बतरस

रिमोट से बातचीत

चन्द्र प्रकाश – आपका नाम?

रिमोट – मेरा नाम रिमोट है।

चन्द्र प्रकाश – आपके परिवार में और कौन–कौन हैं?

रिमोट – मेरी जीवन साथी टीवी और हमारा बेटा स्पीकर और मैं। परिवार में हम तीन ही हैं।

चन्द्र प्रकाश – आपकी जीवन साथी, टीवी वाले कमरे में रहती है। आपका बेटा स्पीकर भी उनके साथ ही रहता है। आप कहाँ रहते हो?

रिमोट – रहने को तो उनके साथ ही रहता हूँ। पर कभी पलंग के ऊपर, कभी नीचे। कभी कुर्सी पर, कभी जमीन पर। इस घर में सब ऐसे ही हैं। मुझे कहीं भी पटक कर भूल जाते हैं। जब मैं नहीं मिलता हूँ तो चिल्लाते हैं। अब तो मुझे खुद पता नहीं कि मैं कहाँ रहता हूँ।

चन्द्र प्रकाश – आपको सबसे ज्यादा दुख कब होता है?

रिमोट – जब इस घर के मालिक जोर से मेरे बटन दबाते हैं।

चन्द्र प्रकाश – आपके साथ घटी कोई ऐसी घटना जो आप सुनाना चाहते हों?

रिमोट – कई घटनाएँ हैं। एक बार इस घर में इनकी कोई बुआजी आयी। वो मुझे हमेशा हाथ में रखती थी। रसोई में जाती तो रसोई में ले जाती। छत पर जाती तो छत पर ले जाती। ऐसे ही इनके फूफाजी, उन्होंने तो मेरे बटन दबाकर, टीवी ऑन किया और मुझे कुर्ते की जेब में रखकर भूल गए। फिर अपने घर ले गए।

चन्द्र प्रकाश – मुझसे मिलकर आपको कैसा लगा?

रिमोट – अच्छा लगा। तुम भी मेरे बेटे स्पीकर की तरह बहुत बोलते हो।

(तभी एक बच्चे के चिल्लाने की आवाज आती है–'मम्मी रिमोट कहाँ है? मम्मी कहती है–'पड़ा होगा यहीं कहीं। देख ले।')

रिमोट – देखा। ये इज्जत है मेरी इस घर में। इन्हें नहीं मालूम कि मेरा इंटरव्यू चल रहा है।

चन्द्र प्रकाश – चलिए ठीक है। आप अपना काम कीजिए। मैं भी चलूँगा अब।

रिमोट – आप कैसे चलेंगे। आपके बटन तो कहीं दिखाई नहीं देते।

चन्द्र प्रकाश – हम बटन से नहीं, पैरों से चलते हैं। अच्छा चलता हूँ। इंटरव्यू जैसा ही लिखने का कोई और काम आया तो फिर मिलूँगा।

चन्द्र प्रकाश नामा, शिक्षक, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र।

बिल्ली से बातचीत

मान सिंह मीना, समन्वयक, उदय किरण।

ममता – आप कहाँ रहती हो?

बिल्ली – घोड़ी के घर में।

ममता – आपके घर में कौन–कौन है?

बिल्ली – क्यों? वोटर लिस्ट में नाम जोड़ना है?

ममता – आपके मम्मी पापा कहाँ गए है?

बिल्ली – इंटरव्यू लेने आई हो कि जासूसी करने। आपको क्या मतलब है मेरे मम्मी–पापा, चाचा–चाची, मामा–मामी, फूफा–फूफी कहाँ गए हैं। आप लोग सब ऐसे ही सवाल करते हो। इंटरव्यू लेने आओ तो थोड़ा पढ़–लिखकर, तैयारी के साथ आया करो।

ममता – क्या आप ही अपने भाई–बहन की देखभाल करती हो?

बिल्ली – नहीं। कम्पनियाँ मजदूर भेज देती हैं, उनकी देखभाल के लिए!
(कहते हुए बिल्ली मुस्कराती है।)

ममता – आपको घोड़ी के घर में खाना मिल जाता है या और जगह जाना पड़ता है?

बिल्ली – आपको अपने घर में काम मिल जाता है या और जगह जाना पड़ता है ?

ममता – आप तो उल्टे सवाल कर रही हैं। जो पूछ रही हूँ वह बताईए?

बिल्ली – घोड़ी के घर के पड़ोस के मकान वाले कहीं बाहर चले गए हैं। इसलिए मोहल्ले में आगे तक के घरों में घूमना पड़ता है।

ममता – मैंने सुना है आप चूहे पकड़कर खा जाती हो?

ममता जागा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

बिल्ली – आप सभी लोग सुनते बहुत हो। ऐसा है कि पड़ोस के घर वाले चूहों को झाड़ू से मार–मार कर फेंक रहे थे। हमें उनका इस तरह बेमौत मर कर सड़ते रहना कभी अच्छा नहीं लगा।

ममता – और क्या पूछूँ! क्या पूछूँ!

बिल्ली – कुछ मत पूछो। आपके सवाल खत्म हो गए। आप अपना कैमरा, रिकॉर्डर उठाइए। इंटरव्यू को एडिट कीजिए और टीवी पर दिखाइए। इजाजत चाहूँगी।

ममता – बहुत बहुत धन्यवाद 'मोरंगे' में हमसे बातचीत के लिए।

बिल्ली – ये 'मोरंगे' क्या है?

ममता – कुछ मत पूछो। हम भी अभी समझ ही रहे हैं कि ये क्या है। हमसे तो जानवरों का इंटरव्यू करने को कहा, इसलिए आपका इंटरव्यू करने चली आई।

बिल्ली – तो जानवरों का इंटरव्यू करतीं। मुझसे बातचीत क्यों की?

ममता – क्यों? क्या आप जानवर नहीं।

बिल्ली – नहीं! हम तो बिल्लियाँ हैं। जानवर तो इंसान हैं, जो जानवरों का शिकार करते हैं। उन्हें कैद में रखते हैं। उन्हें सताते हैं।

ममता – ओह! अच्छा नमस्ते!

बिल्ली – 'म्याऊँ!'

ममता – ओह। माफ कीजिएगा आप नमस्ते की जगह म्याऊँ कहते हैं। मेरी तरफ से आपको भी बहुत–बहुत 'म्याऊँ!'

ममता जागा, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

गतिविधि : मोरंगे के नए स्तभ्भ 'बतरस' के लिए बातचीत लिखकर भेजिए।

पिछले अंक में आपने मधुमक्खी और मच्छर से बातचीत पढ़ी। इस अंक में आपने बिल्ली और रिमोट से बातचीत पढ़ी। इसी तरह आप भी किसी भी चीज या जीव के साथ अपनी काल्पनिक बातचीत कीजिए और लिखकर मोरंगे को भेजिए।

आप मोरंगे पत्रिका या किसी किताब से भी बातचीत कर सकते हैं। आपके मन में दुनिया भर के जो तरह–तरह के सवाल आते होंगे, उनसे भी कोई बातचीत बना सकते हैं। या फिर आप अपने आसपास किसी चूल्हे पर रोटी करती से, खेतों में जाते–जाती से, हैण्डपम्प पर पानी भरते–भरती से, गाय, बैल, भैंस, बकरी, टाइगर, टोप, साइकिल, दोस्त, चाँद, सूरज, धरती, खेत किसी से भी बातचीत करके लिखकर भेज सकते हैं।

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1. छोटो सो आड़्यो, उमें बैठो बाप काड़्यो।
2. छोटी सी मसरी, सारा घर में पसरी।
3. सास, बहू, नणद, भौजाई
   तीन पापड़ केक केक पाँती आई।
4. छोटी सी दुकान जिसमें लकड़ी के सामान।
5. अँधेरे में बैठी रानी, सिर पर आग बदन पर पानी।

निशा गुर्जर, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिर्राजपुरा।

हीहीही–ठीठीठी

1

पिंटू अपने दोस्त बंटी को ज्ञान बांट रहा था कि अगर परीक्षा में पेपर बहुत कठिन हो तो आँखे बंद करो, गहरी साँस लो और फिर जोर से कहो ये सब्जेक्ट मजेदार है इसलिए इसे अगली साल फिर पढ़ेंगे।

2.

पिता बेटे से – रिजल्ट कैसा रहा?

बेटा – वो हेडमास्टर जी का बेटा फेल हो गया।

पिता – तुम्हारे रिजल्ट का क्या हुआ?

बेटा – अपने मिनिस्टर साहब का बेटा भी फेल हो गया।

पिता – अरे, मैं तेरे रिजल्ट की बात कर रहा हूँ।

बेटा – इतने बड़े–बड़े लोगों के बेटे पास नहीं हो सके तो मैं कौनसा अमेरिका के प्रेसिडेंड का बेटा हूँ जो पास हो जाता।

3.

शिक्षक – (विद्यार्थी से) भारत वर्ष के मानचित्र में कुतुबमीनार कहाँ है?

विद्यार्थी – पता नहीं सर।

शिक्षक – तो बैंच पर खड़े हो जाओ।

विद्यार्थी– (बैंच पर खड़ा होकर) सर! यहाँ से भी कुतुबमीनार नहीं दिख रही है।

रवि सिंह गुर्जर, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिर्राजपुरा।

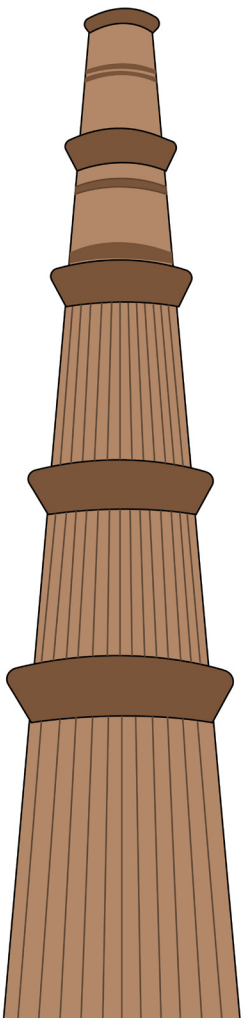

जवाब– 1. सांप 2. चमनी 3. एक–एक 4. माचिस 5. मोमबत्ती।

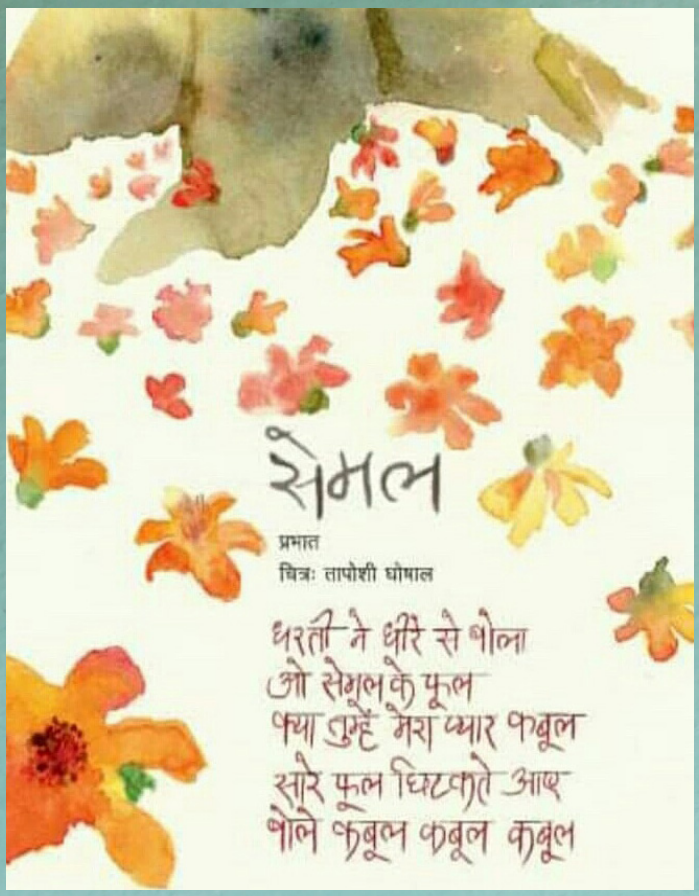
सेमल
प्रभात
चित्रः तापोशी घोषाल
धरती ने धीरे से बोला
ओ सेमूल के फूल
क्या तुम्हें मेरा प्यार कबूल
सारे फूल चिटकाते आए
बोले कबूल कबूल कबूल